12-5-67 ओम शान्ति श्री प्रातःक्लास

मीठे-2 रूहानी बच्चों को नमस्ते। उत्तर भी नही करते हो? कि बाबा नमस्ते। क्यो कि बच्चे जानते है कि
बाबा हमको ब्रह्माण्ड का मालिक भी बनाते है तो विश्व का भी मालिक बनाते है। बाप तो सिर्फ
ब्रह्माण्ड का मालिक बनते है। विश्व का मालिक नही बनते है। बच्चों को ब्रह्माण्ड और विश्व का
मालिक बनाते है। तो बताओ कि बड़ा कौन ठहरा? बच्चे बड़े ठहरे ना। इसलिये ही बच्चे फिर नमस्ते
करते है कि बाबा आप ही हमें विश्व का और ब्रह्माण्ड का मालिक बनाते है। इसलिये आपको भी
नमस्ते। मुसलमान लोग भी सलामालेकम और वालेकम सलाम कहते है ना। तुम बच्चों को खीरखुशी है
जिनको कि निश्चय है। निश्चय बिना तो कोई यहाँ आ भी नही सकते है। यहाँ जो भी आते है वो
समझते है कि हम किसी मनुष्य गुरू के पास नही जाते है। मनुष्य बाप के पास वा मनुष्य टीचर के पास
वा मनुष्यगुरू के पास नही जाते है। तुम आते ही हो रूहानी बाप रूहानी गुरू रूहानी ही टीचर के पास।
वो मनुष्य तो अनेक ही है। भक्ति मार्ग के शास्त्रों में यह भी है कि रचता और रचना के ज्ञान को भी
नही जानते है। ना जानने कारण ही उनको आर्फन कहा जाता है। जो अच्छे पढ़े लिखे होते है वो अच्छी
तरह से समझ सकते है कि हम सभी आत्माओं का बाप वो हुआ सभी का एक ही बाप है। सिर्फ इतना
ही नही जानते है कि वो बाप निराकार है। वो आकर बाप टीच[illegible] भी रूप धारन करते है।
गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। गीता ही है सर्वशास्त्र मई श्रीमद भगवत गीता सर्वोत्तम
उत्तम ते उत्तम। गीता को ही माई बाप कहा जाता है। और जो भी शास्त्र आदि है उनको माई
बाप नही कहेंगे। श्रीमत भगवाद गीता माता गाई जाती है। भगवान के मुख कमल से निकला हुआ
गीता का ज्ञान। ऊँच ते ऊँच बाप है तो जरूर फिर वो भी ऊँच ते ऊँच की ही गाई हुई होगी। गीता
हो गई मदर। बाकी सब है शास्त्र उनके पत्ते। क्रियेशन। रचना से कब वर्सा मिल नहीं सकता। अगर
मानेंगे भी तो अल्प काल के लिये। दूसरे इतने ढेर शास्त्र है जिनको पढ़ने पर अल्प काल का सुख मिलता
है। एक जन्म की लिये। जो तो कि मनुष्य ही मनुष्यों को पढ़ाते है। हर प्रकार की जो भी पढ़ाईयाँ है
वो अल्प काल के ही लिये मनुष्य, मनुष्यों को ही पढ़ाते है। अल्प काल का सुख मिला। फिर दूसरे जन्म
में दूसरी पढ़ाई पढ़नी पढ़ेगी। यहाँ तो एक ही निराकार बाप है जो कि 21 जन्मों के लिये वर्सा देते है।
कोई मनुष्य तो दे नही सकते। वो तो वैथ नाट अपनी क्या देते है। बाप बनाते है पाउण्ड। इसको
कहा ही जाता है शिवालय और रावण राज्य। रावण को शैतान कहा जाता है। परन्तु उनको शैतान क्यों कहते
है। यह कोई नहीं जानते है। अब देवी गवर्मेन्ट कहती है कि छूत-छात निकाल दो। गांधी भी
*** ***** * **** ****
मेहतरों आदि के साथ बैठ कर खाना खाते थे। कहते है कि कोई भेद भाव नही रखो। अच्छा खुद
****
गवर्मेन्ट शंकराचार्य को अब हाथ तो लगावे। छू भी नही सकते। प्राईमिनिस्टर आदि सब लोग जा कर उनके
******** * ******************
आगेनमन करते है। समझते है कि यह तो महन्त है। यहाँ तो कहा ही जाता है कि वो तो हरणाकश्यप
जैसे है। भगवान खुद कहते है कि मनुष्य अपने को ईश्वर मानते है वो बड़े-2 हरणाकश्यप है। बाप
बैठ बच्चों को समझाते है। तुम सभी ईश्वर के बच्चे हो ना। सर्वव्यापी कहने पर अर्थ कुछ भी
नही समझते है। सभी परमात्मा है तो फादर हुड हो जाता है। सब फादर ही फादर है तो फिर वर्सा कहाँ
से मिले? किसीका भी दुःख कौन हरे? बाप को ही दुःख हर्ता सुख कर्ता कहा जाता है। फादर
ही फादर का तो कोई अर्थ ही नही निकलता है। बाप बैठ समझाते है कि यह वो है ही रावण राज्य है।
यह भी ड्रामा में नूँध है। इसलिये ही चित्रो में भी क्लीयर करके दिखाया है। तुम बच्चों की बुद्धी में है कि
हम पुरूषोत्तम संगम युग पर है। बाप पुरूषोत्तम बनाने आये हुये है। जैसा बैरिस्टर डाक्टर्स आदि पढ़ते है
वैसा ही खिताब भी पाते है। समझते है कि इस पढ़ाई से हम फलाना बनेंगे। यहाँ तो तुम सतके संग
में बैठे हो। जिससे कि तुम सचखण्ड में जाते हो। सतधाम भी दो है। एक तो सुख धाम। दूसरा है
**** *********

शान्ति धाम। यह है ईश्वर का [illegible] धाम। बाप तो रचता है ना। अभी तुम बच्चे दिन प्रति दिन समझते जाते हो। बाप समझा कर फिर कहते है कि ऐसे-2 सर्विस करो। शिव बाबा के मन्दिर मे जाओ। उस पर फूल मक्खन गुलाब के फूल बरायटी क्यो चढ़ाते है? कृष्ण के मन्दिर मे कब भी अक के फूल नही चढ़ावेंगे। वहां तो बहुत अच्छे खुशबोदार फूल ले जाते है। शिव के आगे अक के फूल गुलाब के फूल चढ़ाते है। अर्थ तो कोईनही जानते। इस समय तो तुम बच्चो को बाप पढ़ाते है। कोई मनुष्य नही पढ़ाते है और सारी दुनिया मे तो मनुष्य ही मनुष्यों को [illegible] पढ़ाते है। तुमको भगवान पढ़ाते है। कोई मनुष्य को भगवान कदाचित कहा नही जाता है। ल-न को भी भगवान नही कहा जाता है। देवी देवता कहा जाता है। ब्र,वि,शं को भी देवता कहेंगे। भगवान एक बाप ही है। वो है सब आत्माओं का बाप। सब कहते भी है कि हे परमपिता परमात्मा। उनका सच्चा-2 नाम शिव है। और तुम बच्चे हो सालीग्राम। पण्डित लोग जब यज्ञ रचते है तो शिव को तो बहुत बड़ा बनाते है। और सालीग्राम छोटे-2 बनाते है। सालीग्राम कहा ही जाता है असख्य को। वो ही सभी का बाप है। सभी है भाई-2। कहते भी है ब्रदर-हुड। बाप के सब बच्चे भाई-2 है। फिर भाई-बहन कैसे हुये। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से प्रजा रचते है। वो होते है ब्राह्मण और ब्राह्मणियां। हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान है। इसलिये ब्र,कु,कु कहलाते है। अच्छा तो ब्रह्मा को किसने पैदा किया? भगवान ने। ब्र,वि,शं यह सभी क्रियेशन है। सूक्ष्म वतन के भी रचना हो गई ना। ब्रह्मा के मुख [illegible] से तुम बच्चे निकले हो। ब्राह्मण ब्राह्मणियां कहलाते हो। तुम ब्रह्मा मुख वंशावली एडाप्टिड हो। प्रजापिता ब्रह्मा भला बच्चे कैसे पैदा करेंगे? जरूर एडाप्ट ही करेंगे। जैसे गुरू के फालोवरस एडाप्ट होते है तो उनको कहेंगे शिष्य। तो प्रजापिता ब्रह्मा सारी दुनिया का बाप हो गया। इनको ही कहा जाता है ग्रेट-2 ग्रेट फादर प्रजापिता ब्रह्मा। तो यहां ही चाहिये ना। बाकी यह चित्र आदि तो सब है भक्ति मार्ग के। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहां है चाहिये ना। सूक्ष्म वतन में भी तो ब्रह्मा है। नाम गाया हुआ है त्रिमूर्ति। परन्तु सूक्ष्म वतन मे प्रजा तो होती नही है। प्रजापिता ब्रह्मा कौन है? यह सब बाप ही बैठ समझाते है वो ब्राह्मण लोग भी अपने को ब्रह्मा की औलाद कहते है। अब ब्रह्मा कहां है? ऐसे तो वो नही कहेंगे कि हम ब्रह्मा के बच्चे है। वो चले गये। यहां तुम ढेर ब्राह्मण बच्चे बैठे हो। ब्रह्मा कहां है? तुम कहेंगे यह बैठे है। [illegible] वो कहेंगे होकर गया है। फिर अपने को पुजारी ब्राह्मण कहलाते है। अभी तुम तो प्रैक्टिकल मे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो आपस मे भाई-बहन हो गये। ब्रह्मा को एडाप्ट किया है शिव बाबा ने। कहते है कि मै इस बूढ़े तन मे प्रवेश कर तुमको राजयोग सिखाता हूँ। मनुष्य को देवता बनाना यह कोई मनुष्य का काम नही है। बाप को ही रचता कहा जाता है। भारतवासी जानते है कि शिव जयन्ति भी मनाई जाती है। शिव है बाप। मनुष्यों को तो यह भी पता नही है कि मनुष्यों को यह देवी [illegible] देवताओं का राज्य भी किसने दिया। स्वर्ग का रचता तो है ही परमपिता परमात्मा। जिनको ही पतित पावन कहा जाता है। आत्मा असल प्योअर होती है। फिर सतो रजो तमो मे आती है। इस समय कलियुग मे सब है तमोप्रधान। सतयुग मे सब सतोप्रधान थे। आज से 5000 वर्ष पहले इन ल-न का राज्य था। 2500 वर्ष चला। ल-न की डायनेस्टी चली। उनके बच्चो ने भी तो राज्य किया ना। ल-न दी फर्स्ट दी सैकिंड चला आता है। मनुष्यों को इन बातो का कुछ भी पता नही है। इस समय है सब तमोप्रधान पतित। यहां एक भी मनुष्य पावन हो नही सकते है। सब पुकारते है कि हे पतित पावन आओ। तो पतित दुनिया हुई ना। इसको ही कलियुग नर्क कहा जाता है। नई दुनिया को सतयुग पावनदुनिया कहा जाता है। फिर पतित कैसे बने यह कोई नही जानते है। भारत मे एक भी मनुष्य नही है जो कि अपने 84 जन्मो को जानता हो। मनुष्य मैक्सीमम 84 जन्म लेते है। मिनिमम एक। भारत है अविनाशी खण्ड। शिव बाबा का यही है अवतार होता है। भारत खण्ड कब विनाश नही होता है। भारत खण्ड कब विनाश नही होता है बाकी सब खण्ड विनाश हो जाते है। इस समय

समय आदी सनातन देवी देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। अब कोई भी अपने को देवी देवता नही कहलाते है। क्यों देवता तो सतोप्रधान पावन थे। अभी तो सभी पतित पुजारी बन गये है। यह भी बाप ही बैठ समझाते है। भगवानोवाच्य है नाँ। भगवान एक है सबका बाप है। वो एक ही बार भारत मे आते है। कब आते है? पुरुषोतम संगम युग पर। इस संगम युग को ही पुरुषोतम संगम युग कहा जाता है। यह संगम युग कलियुग से सतयुग पतित से पावन बननका है। कलियुग मे रहते है पतित मनुष्य। सतयुग मे है पावन मनुष्य। इसलिये ही इसको पुरुषोतम संगम युग कहा जाता है। जबकि बाप आकर पतित से पावन बनाते है। तुम यहाँ आये ही हो मनुष्य से देवता पुरुषोतम बनने। मनुष्य तो यह भी नही जानते है कि हम आत्माये निर्वाण धाम की रहने वाली है। यहाँ आते है पार्ट बजाने। इस नाटक की आयु 5000वर्ष है। हम इस बेहद के नाटक मे पार्ट बजाते है। इतने सभी मनुष्य पार्ट धारी है। यह ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। कब बन्द होने का नही है। पहले-2 इस नाटक मे सतयुग मे पार्ट बजाने आते है। देवी देवताये। फिर त्रेता मे क्षत्री। इस नाटक को भी जानना चाहिये-न नाँ। मनुष्य एक भी नही जानते है। इसलिये ही इस समय के मनुष्यों को कहा जाता है बन्दर बुधी। यह है ही काँटो का जंगल। सब मनुष्य दुःख मे है। कलियुग के बाद फिर सतयुग आता है। कलियुग मे 500 सौ करोड़ मनुष्य है। तो सतयुग मे कितने होगे? बहुत थोड़े। सूर्यवंशी आदी सनातन देवी देवता ही होंगे। यह पुरानी दुनिया अब बदलती है। मनुष्य सृष्टी से फिर देवताओं की सृष्टी होगी। आदी सनातन देवी देवता धर्म था। परन्तु अपने को देवता कहलाते ही नही है। अपने धर्म को ही भूल गये है। यह सिर्फ भारतवासी ही है जो कि अपने धर्म को भूल गये है। हिन्दुस्तान मे रहने कारण हिन्दु ही नाम रख दिया है। देवी-देवताये पावन थे। यह है पतित। इसलिये अपने को देवता कह नही सकते। इसलिये ही अपने को देवता कह नही सकते है। देवताओं की पूजा करते रहते है। अपने को पुजारी नीच कहते रहते है अब बाप समझाते है कि तुम ही पुज्य थे और तुम्ही आकर अब पुजारी पतित बने हो। सो का अर्थ भी समझाया है। वो कह देते है आत्मा सो परमात्मा। यह है झूठा अर्थ। झूठी माया.... सतयुग मे ऐसे नही कहेंगे। सच खण्ड की स्थापना बाप करते है। झूठखण्ड फिर रावण बनाते है। यह भी बाप आकर समझाते है। सृष्टीकी आदि मध्य अन्त को कोई नही जानते है। तो जनावरों से भी बदतर ठहरे नाँ। यह है ही बन्दरो की दुनियाँ। अभी तुमको बन्दर से मन्दिर लायक बनाया जाता है। आत्मा क्या है परमात्मा क्या है यह कोई एक भी नही जानते है। परमात्मा बाप ही आकर समझाते है। तुम आत्मा बिन्दी हो। उसमे ही 84जन्मो का पार्ट नुँधा हुआ है। हम आत्मा कैसी है यह भी कोई नही जानते है। हम बैरिस्टर है फलानी है। यह तो जानते है कि लेकिन आत्मा को नही जानते है। बाप ही आकर पहचान देते है कि तुम्हारी आत्मा मे ही 84जन्मो का पार्ट नुँधा हुआ है। जो तो कब भी विनाश नही होता है। इस ड्रामा की ही आद मध्य अन्त को नही जानते है तो वे इडियट ठहरे नाँ। यह दुनियाँ ही इडियटो की है। काँटो का जंगल है। एक दो को काँटे मारते रहते है। यही भारत गार्डन आफ फलावर्स कहा जाता है। सुख ही सुख था। अभी तो दुःख ही दुःख है। यह बाप ही नालेज देते है। वो ही नालेज फुल है। तुमको कोई मनुष्य नही पढ़ाते है। इस पढ़ाई से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। यह है नई बात। भगवान को सर्वव्यापी कहना यह तो गाली देना है। भक्त लोग बिल्कुल ही दुर्गति को पाये हुये है भगवान को गाली देते है कहते है कच्छ अवतार मच्छ अवतार। ऐसी-2 ग्लानी की बाते हम सुन नही सकते। कण-2 मे परमात्मा कह देते है। कितनी गाली है। अब बाप समझाते है कि मै हर 5000वर्ष के बाद आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। रावण फिर नर्क बनाते है। यह बाते दुनियाँ मे और कोई नही जानते है। बाप ही आकर तुमको

मनुष्य से देवता बनाते है। गायन भी है कि मूत पलीती कपड़ धोये। वहाँ मूत होता नही है। वो तो है ही सम्पूर्ण निरविकारी दुनियाँ। अभी है विशयका वैश्यालय। बाप आकर शिवालय बनाते है। साधु सन्त आद यह कोई भी नही जानते है कि भारत हेवन था। अब हेल है। फिर बाप आकर हेवन बना रहे है। यह सच्चा-2 सत्संग है जहाँ बाप बैठ कर पढ़ाते है। मनुष्य नही पढ़ाते है। जिसमे प्रवेश किया है वो भी पतित आत्मा था। उनमे आये है। बुलाते भी है कि हे पतित पावन आओ हमको रावण ने पतित बनाया है। परन्तु जानते ही नही है कि रावण कब आया क्या हुआ। रावण ने कितना कंगाल बना दिया है। भारत 5000 वर्ष पहले कितना शाहुकार था। सोने हीरे जवाहरो के महल थे। कितना धन था। अभी क्या हालत है। सो ही सिवाय बाप के सिरताज कोई बना नही सकते है। अभी तुम कहते हो कि शिव बाबा भारत को हेवन बनाते है। गाते भी है कि हे पतित पावन.. परन्तु अपने को पतित कोई भी नही समझते है। अरे तुम पतित नही हो? तब तो गंगा स्नान करने पाप धोने जाते हो ना। तो कहते है पतित मनुष्य गंगा को पतित कर देते है फिर हम पाव डाल कर पावन बनाते है। अब बाप कहते है कि मौत सामने खड़ा है। तुम सब वानप्रस्थी हो। अब जाना है वापस। इसलिये बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। यह गोले का चित्र बड़ा अच्छा है। परन्तु इससे भी बड़ा और क्लीयर बनाना चाहिये। प्रदर्शनी के लिये बाबा कहते है कि कोई किसीका जानने वाला हो तो टेन्ट बनवा देवे। उसमे एक हाल हो दो बेडरूम साथ मे बाथरूम। कश्मीर मे ऐसे टेन्ट आद मिलते है। जिनको तो बरसात मे भी कुछ नही होता है। तो ऐसा कोई बच्चा समझू सयाणा होवे जो बाबा को टेन्ट का प्रबन्ध करके देवे। और अपनी कार का भी प्रबन्ध होवे। जिसमे प्रदर्शनी प्रोजेक्टर आद और टेन्ट रख कर फिर गांव-2 मे देशादेशान्तर जाकर सर्विस कर सकते है। सैम्पल एक बनवाओ फिर 6'8 बनवा लेंगे। मोटर भी ऐसी हो जिसमे यह सब रख भी सके और 6, 8 बैठ भी सकें। देश-देशान्तर सर्विस करते जावेंगे तो कितने स्वर्गवासी बनेंगे। मोटर मे बड़ी ग्राउंड आद भी मिलेगा। खर्चा बाबा देंगे। एक मास के अन्दर ही कोई टेन्ट का नमूना बना कर दिखावें। बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिये। हम ऐसे-2 सर्विस करके गरीबो का उधार करें। उनको स्वर्ग का मालिक बनावें। जितनी ऊँची पढ़ाई है उतनी ही खुशी होनी चाहिये कि हमको बाप भगवान पढ़ाते है। ऐम आब्जेक्ट सामने ही है तो कितनी खुशी होनी चाहिये। परन्तु चलते-2 गिर पड़ते है। बाप कहते है कि आपस मे लून पानी नही बनो। जब कि जानते हो कि हम ऐसी दुनियाँ मे जाते है जहाँ शेर बकरी इकठा जल पीते है। वहाँ तो हर एक चीज देखने से ही दिल खुश हो जाती है। नाम ही है स्वर्ग। बोलो अभी हम वहाँ जाने की तैयारी कर रहे है। पवित्र तो जरूर बनना ही पड़े। बाप कहते है काम महाशत्रु है। अब मै योगी बनाता हूँ तो कहते हो कि विकारी भोगी बनो। शर्म नही आती है। बाप बन कर हमको काम कटारी के नीचे डालना चाहते है बात करने की अक्ल चाहिये। ऐसी-2 जब निकलेंगी तब देखना कितनी जल्दी शो होगा। परन्तु चाहिये नष्टोमोहा। एकबार मर गये तो फिर याद ही क्यो आना चाहिये। परन्तु बहुतो को बच्चों आद की याद आती रहती है। जैसे कि बन्दरियां हो। फिर बाप के साथ योग ही कैसे लगेगा। इसमे तो यही बुधी मे रहे कि हम शिव बाबा के है। यह पुरानी दुनियाँ तो खत्म ही हुई पड़ी है। बाप कहते है मुझे याद करो। बाकी सब भूल जाओ। बाबा ने भी छोटे पन मे बहुत कुछ पढ़ा है फिर बड़ेपन मे सब भुला दिया। वो है सब दन्त कथायें। अब बाप बच्चों को कोई तकलीफ नही देते है। सिर्फ कहते है कि मौत से पहले बाप से वर्सा ले लो। बाप को याद करो। और 84 का चक्र याद करो। उसमे ही सब आ जायेगा। बाप बीज तो सारे झाड़ को जानते है ना। बाप कहते है कि तुम बच्चों को ही यह ज्ञान देता हूँ। द्वारा सुनने से ही तुम स्वदर्शनचक्र धारी बनते हो। परन्तु यह अलंकार तुमको शोभते नही है। इसलिये विष्णु को दे दिये है। बाकी स्वदर्शनचक्र से किसीको मारने की बात नही है। अच्छा बच्चों से गुड़ नाइट